# नियतुल मोमिन

-: मुअल्लिफ़ :-

ख़लीफ़ए शैख़ुल इस्लाम

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

# नियतुल मोमिनीन

-: मुअल्लिफ़ :-

ख़लीफ़ए शैख़ुल इस्लाम

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

प्रेसिडेन्ट : मोह़सिने आज़म मिशन हेड ऑफ़िस

अह़मदाबाद, **M : 96 24 22 12 12**

किताब : नियतुल मोमिन (हिन्दी)

मुअल्लिफ़ : ख़लीफ़ए शैख़ुल इस्लाम

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला (अहमदाबाद)

टाइप-सेटींग : जनाब तौफ़ीक़ अहमद अशरफ़ी (बड़ौदा)

सिने इशाअत : सप्टेम्बर-2020

नाशिर : मोहसिने आज़म मिशन हेड ओफ़िस 2/B

कीर्तिकुंज सोसायटी शाहे आलम टोलनाका अहमदाबाद-380028

-: मिलने का पता :-

मक्तबए शैख़ुल इस्लाम, अलिफ़ किराना के सामने,

रसूलाबाद, शाहे आलम अहमदाबाद-380028

और मोहसिने आज़म मिशन की तमाम ब्रान्चें

कोन्टेकट : 9624221212

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ

अल्लाह के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''निय्यतुल मोमिन ख़ैरुम मिन अ़मलिही'' या'नी मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। गोया येह ह़दीस इस बात का एलान कर रही है कि मज़्हबे इस्लाम जहां एक त़रफ़ इन्सान को अच्छे कामों की त़रफ़ बुलाता है और नेक कामों को हमेशा करते रहने का पैग़ाम देता है, वहीं दूसरी त़रफ़ वोह बन्दों को इस चीज़ पर भी उभारता है कि वोह उन कामों को नेक इरादों के साथ शुरूअ़ करें और अच्छी निय्यत के साथ इसे अन्जाम तक पहुंचाए। इस नेक निय्यत व अच्छे इरादे का सब से बड़ा फ़ाइदा येह है कि अगर कोई बन्दा निय्यत कर लेने के बा'द उस काम को शुरूअ़ न कर सका या शुरूअ़ कर के उसे पूरा न कर सका तब भी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उस बन्दे को अपने फ़ज़्लो करम से उस की नेक निय्यती के सबब भरपूर अज्रो सवाब अ़त़ा फ़रमा देता है।

इस किताब ''**निय्यतुल मोमिन**'' में मुअल्लिफ़े किताब जनाब ह़ाजी इब्राहीम साहि़ब अशरफ़ी (ख़लीफ़ए हुज़ूर शैख़ुल इस्लाम व प्रेसीडेन्ट मोह़द्दिसे आज़म मिशन, गुजरात) ने बन्दों की निय्यत के तअ़ल्लुक़ से गुजराती ज़बान में एक उ़म्दा और मुफ़ीद बह़स को पेश किया है। इस की तालीफ़ में मुअल्लिफ़ ने कुरआने करीम की आयात, कुछ ह़दीसें, बुज़ुर्गों के अक़्वाल और ह़िकायात को नक़्ल कर के मज़ामीन को पढ़ने वालों के लिए नफ़्अ़ बख़्श बनाया है, साथ ही हुज़ूर शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा मदनी मियां साहि़ब अशरफ़ी जीलानी की तक़रीरों से भी कुछ बातों को हू बहू नक़्ल किया है।

मुअल्लिफ़े मौसूफ़ इस से पहले भी मुख़्तलिफ़ उ़नवान पर कुछ किताबों की तालीफ़ फ़रमा चुके हैं। वोह दीनी व समाजी ख़िदमत का बहुत शग़फ़ रखते हैं। बुज़ुर्गों की किताबों से इन के पैग़ामात को जम्अ़ कर के अपने मुर्शिद की दुआ़ओ और उ़लमा की रहनुमाई के साथ मौसूफ़ अपनी तालीफ़ात को अ़वाम के सामने पेश कर देते है।

अल्लाह पाक जनाब ह़ाजी इब्राहीम साहि़ब की इन ख़िदमात को क़ुबूल फ़रमाए और उन के इल्मो अ़मल में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। **आमिन बिजाहि सय्यिदिल मुर्सलीन।**

26-8-2020

सय्यिद ह़सन अ़स्करी अशरफ़ अशरफ़ी अल जीलानी

सज्जादा नशीन आस्तानए हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द व

सज्जादा नशीन आस्तानए हुज़ूर अमीरे मिल्लत رَحِمَہُمَا اللہُ تعالٰی

## (1) हमेशा की जन्नत या जहन्नम क्यूं ?

येह लिखने वाला एक रोज़ हज़रत शैखुल इस्लाम की बारगाह में बैठा था के हज़रत से एक सुवाल पूछ लिया। "हज़रत हमारी ज़िन्दगी बहुत छोटी है और इस छोटी सी ज़िन्दगी में से बचपन के अय्याम निकाल डाले के जिस में न शऊर, न समझ, न कुछ फ़र्ज़ न वाजिब या'नी कोई इबादत होती ही नहीं। बचपन बस खेल कूद में गुज़र जाता है। बाक़ी के सालों में दीनी व दुन्यवी ता'लीम और रोज़ी की फ़िक्र, धंधा, नौकरी, खेतीबाड़ी, दुकानदारी या शादी बियाह में बीत जाता है और फिर जवानी में अक्सर ग़फ़्लत भी तारी रहती है। फिर जो थोड़ी बहुत इबादतें होती है तो उस में भी ग़फ़्लत, शैतानी नफ़्सानी वस्वसे, रियाकारी वग़ैरा शामिल रहती है, तो क्या येह इबादत हमें जन्नत में ले जाएगी ?

और काफ़िर इस छोटी सी ज़िन्दगी में 30/40 साल या ज़ियादा से ज़ियादा 60/70 साल कुफ्र करता हैं तो उस को हमेशा की जहन्नम क्यूं ? येह बात हमारी समझ में नहीं आती।

हज़रत ने फ़रमाया : सुनो ! न मुसलमान को जन्नत उस के आ'माल से मिलेगी और न काफ़िर को जहन्नम उस के आ'माल की वजह से मिलेगी, बल्कि मुसलमान जन्नत में और काफ़िर जहन्नम में अपनी निय्यत के बदले जाएगा।

मुसलमान अल्लाह तआला की वहदानियत को तस्लीम करता है और उस की इबादत करता रहता है और उस की निय्यत येह होती है कि मैं हमेशा ज़िन्दगी भर ईमान पर रहूंगा और कभी कुफ्र न करूंगा, तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से येह निय्यत उस को हमेशा की जन्नत का हक़दार बना देगी अब इस निय्यत के साथ जितने ज़ियादा आ'माले सालिहा करेगा वोह उतने बड़े बड़े मर्तबे

पाएगा **और येह अल्लाह का फ़ज़्ल है कोई अ़मल का नतीजा नहीं ।**

"ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ۝"

**तर्जमा :** येह अल्लाह का फ़ज़्ल है वोह जिसे चाहे अ़ता करे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है । (सूरए जुमुआ़ आयत नं, 4)

और वैसे काफ़िर जो ईमान व इस्लाम का मुन्किर हैं और वोह कुफ़्र का इक़रार करने वाला होता हैं और वोह हमेशा कुफ़्र पर ही जमे रहने की निय्यत रखता है और दूसरों को भी कुफ़्र पर बुलाता है तो कुफ़्र पर राज़ी रहना और हमेशा कुफ़्र करते रहने की निय्यत उसे हमेशा की जहन्नम के लाइक़ बना देती है **और येह अल्लाह का अ़द्ल है कोई ज़ुल्म नहीं है क्यूंकि अल्लाह इस बात से पाक है कि वोह ज़ुल्म करे बल्कि येह इन्साफ़ हैं ।** शुक्र करो कि उस ने तुम्हें मोमिन बनाया ।

## (2) निय्यतुल मोमिन
## ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम की नज़र में

येह तक़रीर ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम ने ह़ैदराबाद (दक्कन) में की थी, उस पूरी तक़रीर का एक जुज़ ह़ाज़िरे ख़िदमत है । ह़ज़रत फ़रमाते हैं :

**"हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं**
**राह दिख लाए किसे ? रहरवे मन्ज़िल ही नहीं"**

देखो ! एक काम करो, काम एक करो, बहुत सारी निय्यतें लगा लो ज़ियादा सवाब मिलेगा । जैसे आप ने किसी को एक रूपिया दिया इस लिये दिया कि येह मेरा अ़ज़ीज़ है इस लिये दे रहा हूं, फिर येह निय्यत के येह ग़रीब है इस लिये दे रहा हूं, फिर येह निय्यत के

येह यतीम है इस लिये दे रहा हूं, फिर येह कि येह मेरा हमसाया है इस लिये दे रहा हूं। तो आप इस त़रह़ जितनी निय्यतें बढ़ाते जा रहे हैं इतनी ही नेकियां बढ़ती जा रही हैं आप ने दिया तो सिर्फ़ एक ही रूपिया है मगर निय्यतें मुख़्तलिफ़ होती जा रही है तो सवाब बढ़ते जा रहा है इसी लिये कहा गया है कि....

**निय्यतुल मोमिन ख़ैरुम मिन अ़मलिही व निय्यतुल काफ़िर शर्रुम मिन अ़मलिही।**

**या'नी :** मोमिनीन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है और काफ़िर की निय्यत उस के अ़मल से बदतर हैं।

बहुत बड़े नाज़ुक मोड़ की त़रफ़ मैं आप को ले कर आ गया हूं। एक सुवाल का जवाब मैं आप को देता चलू, जो बार बार होता है कि क्या येह इन्साफ़ का तक़ाज़ा हैं अपने दिमाग़ से सोचो और आप ही बताओ कि एक आदमी जितनी ग़लत़ी करे उस को उतनी ही सज़ा मिलनी चाहिये ना ! और आदमी जितना अ़मल करे उस को उतना ही सवाब मिलना चाहिये ना ! मगर आप देखते क्या हो ? एक काफ़िर अगर एक साल कुफ़्र करे तब भी जहन्नम और पचास साल कुफ़्र करे तब भी जहन्नम और अगर देढ़ सौ साल कुफ़्र करे तब भी जहन्नम और फिर सब के सब हमेशा के लिये जहन्नम में !

और येह मोमिन साहि़ब एक साल मोमिन रहे तब भी जन्नत ! पचास साल मोमिन रहे तब भी जन्नत ! और देढ़ सौ साल मोमिन रहे तब भी जन्नत ! और वोह भी हमेशा के लिये जन्नत !

होना तो येह चाहिये था कि एक साल अ़मल करने वाले को एक साल जन्नत में रख कर कहीं इधर उधर भेज देते मगर ऐसा नहीं होता हमेशा के लिये जन्नत ! अब सुवाल येह पैदा होता है कि जब अ़मल करने वाले ने इतना बड़ा अ़मल नहीं किया तो इतना बड़ा

बदला कैसे ? और जब ग़लती करने वाले ने इतनी बड़ी ग़लती नहीं की तो इतनी बड़ी सज़ा कैसे ?

याद रहे ! येह सज़ा या जज़ा जो है वोह किसी अ़मल का नतीजा नहीं हैं येह निय्यत का नतीजा हैं मोमिन की येह निय्यत कि मैं हमेशा मोमिन रहूंगा येह हमेशा रहने की निय्यत उसे हमेशा का जन्नती बना देती है और काफ़िर की हमेशा कुफ़्र पर रहने की निय्यत उसे हमेशा का जहन्नमी बना देती है। मा'लूम हुवा कि निय्यत का मुआ़मला ही अलग है।

## (3) खाना खाने की निय्यत

ह़ज़रत शैखु़ल इस्लाम के कलाम से ज़ाहिर हो गया कि निय्यत का मुआ़मला ही अलग है एक बन्दा हमारे साथ मस्जिद में ए'तिकाफ़ में बैठा था घर से खाना भरपूर आता था लेकिन वोह खाना बहुत कम खाया करता था और ज़ियादा खाना और अच्छा लज़ीज़ (Tasty) खाना औरो के लिये छोड़ देता था। जब उस से पूछा गया की इस में तेरी क्या निय्यत है तो उस ने एक लम्बी चौड़ी तक़रीर कर दी और समझाया।

(1) मैं लज़ीज़ खाना इस लिये छोड़ देता हूं कि वोह मेरे साथियों की ग़ीज़ा बने मैं उन को फ़ाएदा पहुंचाऊं की हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **ख़ैरुन्नास मंय्यन फ़उ़न्नास** तुम में बेहतर वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए।

(2) और येह कि उन लोगों का दिल खु़श हो कि मोमिनीन के दिल को खु़श करना अ़ल्लाह को राज़ी करना है और येह कि मैं इस छुटे हुए खाने को मेरी आखि़रत का तौशा बनाऊं के दुन्या में तू जो भी छोड़ेगा वोह तुझे आखि़रत में मिलेगा। हमें बताया गया कि **अल ऐशु ऐशुल आखि़रह** या'नी मझे तो बस आखि़रत के मझे है।

(3) और येह की कम खाने से पेट खाली होने से नीन्द का ग़ल्बा कम रहता है तो इबादतें ज़ियादा हो सकती है।

(4) और येह कि कम खाने से बार बार वोशरूम (Toilet) पाखाने जाने से बचा रहता हूं तो इबादत ज़ियादा होती है।

(5) और येह कि मैं पेट की ज़रूरत से कम खाना इस लिये भी खाता हू कि येह आदत अल्लाह पाक को पसन्द है। जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह जिस को पसन्द करता है उसे तीन (3) ने'मतें अ़ता फ़रमाता है (1) कम खाना (2) कम बोलना और (3) कम सोना।

(6) और येह कि खाना कम खाना और सादा खाना खाना येह सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम की सुन्नत है कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कभी लज़्ज़त के लिये खाना नहीं खाया और कभी दिखावे के लिये कपड़े नहीं पहने उन की निय्यते येही होती थी कि जिस्म की बक़ा के लिये और इबादत की कुव्वत के लिये खाते थे और सित्र ढांकने के लिये और सर्दी या गर्मी से अपने को बचाने के लिये पहनते थे।

(7) और कम खाने वाला बीमार कम पड़ता है तो सिहतो तन्दुरुस्ती बनी रहे इस लिये कम खाता हूं।

(8) खाना कम खाना सुन्नते औलिया भी है : जैसे सय्यिदुना दाऊद ताई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सूखी रोटी पानी में भीगो कर खा लिया करते थे या सत्तू फाक लिया करते थे और फ़रमाते थे कि इस से जो वक़्त बचता है उस में मैं सत्तर (70) तस्बीह ज़ियादा पढ़ लेता हूं।

(9) खाना कम खाना सालिहीन की सुन्नत है : जैसे के सय्यिदुना हसन बसरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : **मोमिन तकल्लुफ़ से बरी है**। या'नी मोमिन नख़्रे नहीं करता और आप ने येह भी फ़रमाया

कि मोमिन को तो इतनी गिज़ा काफ़ी है जितना बकरी के बच्चे को या'नी एक मुठ्ठी छुहारे (Dry dates) और दो घुंट पानी।

(10) और येह भी कि खाना कम खा कर और सादा खाना खा कर मैं अपने नफ़्स और ख़्वाहिशात को मारूंगा, इस लिये के नफ़्स के ख़िलाफ़ करना सवाब है और नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोकने पर अल्लाह के बड़े बड़े वा'दे है।

(11) और येह कि ज़ियादा खाना खाने से वज़्न बढ़ जाता है लोग मज़ाक़ उड़ाते है कोई मोटा कहता है कोई पेटू कहता है ! येह मज़ाक़ उड़ाने वाले ख़ुदा के गुनहगार होते है मैं कम खा कर उन को गुनाह से बचाता हूं।

(12) मैं इस लिये भी कम खाता हूं कि भूको को भूल न जाऊं कि बादशाहत के ज़माने में भी सय्यिदुना युसूफ़ عَلَيْهِ السَّلَام कम खाया करते थे और अक्सर भूके रहते थे जब के उन के ख़ज़ाने भरे हुए थे जब आप से अ़र्ज़ किया गया कि "इतने अ़ज़ीम ख़ज़ानों के मालिक होते हुए भी आप भूके रहते हो ? तो आप ने फ़रमाया कि येह इस अन्देशे से कि कहीं सैर हो जाऊं तो कहीं भूको को भूल न जाऊं।" سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ क्या पाकीज़ा अख़्लाक हैं ! तो साबित हुवा कि भूका रहना अल्लाह के नबी सय्यिदुना युसूफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है।

(13) और येह इस लिये कि भूके पेट से इ़बादत करने से "**तवज्जोह इलल्लाह**" ज़ियादा होती है।

(14) और येह कि खाना **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर शुरूअ़ करना और खाने के बा'द **अल हम्दु लिल्लाह** कहना चाहिये कि इस से खाने के बा वुजूद रोज़े का सवाब मिलता है और येह भी फ़ाएदा के खाने से पहले **बिस्मिल्लाह** कहने से शैतान खाने में शरीक नहीं हो सकता।

(15) और येह कि खाना लाल दस्तरख़्वान पर बैठ कर खाना चाहिये कि येह सुन्नत है और येह कि खाना दाहिने हाथ

(Right hand) से खाना चाहिये और येह कि खाते वक़्त सर पर टोपी होनी चाहिये और येह कि खाने के बिच में पानी पी लेना चाहिये क्यूंकि हमे कहा गया कि पेट का एक तिहाई हिस्सा खाने से और एक तिहाई हिस्सा पानी से और एक तिहाई हिस्सा हवा से भरो।

## (4) इल्मे दीन (किताबें लिखने और छपवाने) की निय्यतें

जिस त़रह़ सदक़ा, ख़ैरात करने वाले मुख़्तलिफ़ निय्यतें कर के ज़ियादा सवाब कमा सकते है और जिस त़रह़ खाना खाने वाला खा कर भी सवाब कमा लेता है, इस त़रह़ कई कई निय्यतें हर अ़मल के साथ शामिल की जा सकती है और इसी त़रह़ छोटे से अ़मल पर भी पहाड़ जितना सवाब आदमी कमा सकता हैं।

फ़िरिश्तों पर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर फ़ज़ीलत इल्म की वज्ह से ही मिली और अल्लाह तआ़ला ने अपने क़ुरआने पाक में हमें हुक्म दिया :

सूरए नहल आयत नं. 43 में

فَاسْأَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ

**तर्जमा :** इल्म वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते।

और फ़रमाया कि

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا

**तर्जमा :** अल्लाह से उन के बन्दों में से सिर्फ़ वोही डरते है जो इल्म वाले है। (पारह 22 सूरए फ़ातिर, आयत नं. 28)

और येह भी फ़रमाया कि

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ

**तर्जमा :** और समझाओ समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है। (पारा 27 सूरए ज़ारियात आयत नं. 55)

तो येह है इल्म की फ़ज़ीलत और इल्म का मक़ाम समझना हो तो देखो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام, ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के पास इल्म सिखने पहुंचे ।

अब ह़ाल येह है कि आदमी दर्सगाहों के लिये वक़्त नहीं निकाल पाता है तो अब सह़ीह़ इल्म ह़ासिल करना सिर्फ़ किताबों ही से हो सकता है और किताब लिखने और छपवाने, कम क़ीमत में बेचने फ़्री तक़्सीम (Free distribution) करने में भी मुख़्तलिफ़ निय्यतें हो सकती है । जैसा कि

(1) ज़िक्रे खुदा व ज़िक्रे रसूल व ज़िक्रे औलिया होता रहे और रह़मते बरसती रहे । जैसा कि ह़ज़रते सुफ़ियान इब्ने उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते है : **"इन्द ज़िक्रस्सालिह़ीन तनज़्ज़लुल रह़मा"** या'नी जहां जहां सालिह़ीन का ज़िक्र होता है वहां वहां रह़मत बरसती है ।

(2) इल्मे दीन फैले और तारीकियां दूर हो, जहालत दूर हो और पढ़ने वाले के दिल मुनव्वर हो ।

(3) लोग पढ़ेंगे तो शायद किसी गुनहगार को तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाए और हम उस में ज़रीआ़ बने ।

(4) नेक आ'माल की बरकतें जान कर लोग नेक बन जाए और हम उस में ज़रीआ़ बने । जैसा कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अ़ली ! كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अगर एक आदमी भी तेरे समझाने से राहे रास्त पर आ जाए तो येह तेरी मग़्फ़िरत के लिये काफ़ी है ।

(5) क़ौम को फ़ाएदा पहुंचे कि हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में बेहतर वोह है जो दूसरों को फ़ाएदा पहुंचाए ।

(6) किताबें तोह़फ़्तन दी जाए के तोह़फ़ा देना सुन्नत है। मोमिन का दिल ख़ुश होता है तो अल्लाह करीम ख़ुश होता है।

(7) लोग बद अ़क़ीदा गुमराह फ़िर्क़े जैसे वहाबी, देवबन्दी क़ादियानी, अहले ह़दीस वग़ैरा की गुमराहियों को जाने और उस से दूर रहे कि मिशन की जानीब से छपने वाली किताबें अहले सुन्नत के अ़क़ीदो के मुत़ाबिक होती है तो लोगों को गुमराहियों से बचाया जा सके।

(8) इस काम में जो ख़र्च हो उस माल का सवाब और इल्मे दीन फैलाने का और लोगों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाने की सई (कोशिश) करने का सवाब अपने मर्ह़ूमीन को और हु़ज़ूर की तमाम उम्मत को और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर क़ियामत तक आने वाले मोमिनीन की रूह़ को ईसाले सवाब कर के उन की अरवाह़ को ख़ुश कर सके।

(9) अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 28 सूरए तह़रीम आयत नं. 6 में फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

**तर्जमा :** ऐ ईमान वालो ! अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का इन्धन (Fuel) आदमी और पथ्थर (मुर्तिया) है।

आदमी ख़ुद पढ़े, इ़ल्म ह़ासिल करे, अपनी औलाद को सिखाए पढ़ाए इ़ल्म होगा तो ख़ौफ़े ख़ुदा होगा और ख़ौफ़ ही तक़्वा है, तक़्वा इन्सान को जन्नत में ले जाएगा। जहालत तारीकी (अन्धेरा) है और तारीकी गुमराही की त़रफ़ ले जाती है और गुमराही जहन्नम में ले जाती है।

(10) किताबों की छपाई में हिस्सा ले कर आप मोहद्दिसे आज़म मिशन के साथ शामिल हो सकते है। "**मिशन का मक़सद क़ौम की ख़िदमत**" मिशन मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ से क़ौम की ख़िदमत करता है। जैसे मस्जिद, मद्रसे, ख़ानकाहे ता'मिर करना, ग़रीब यतीम बच्चियों की शादी करवाना, बेवाओ की मदद करना, टीफ़ीन सर्विस के ज़रीए भूको को खाना खिलाना, ता'लीम के लिये मद्रसे, स्कूल चलाना तो जब आप किताबों के ज़रीए मिशन से जुड़ जाओगे तो सारे कारे ख़ैर में आप डायरेक्ट या इन्डायरेक्ट हिस्सा लेने वाले बन जाओगे और सवाब के हक़दार बन जाओगे।

(11) मिशन के साथ जुड़ने के लिये मिशन के फ़ाउन्डर और सरपरस्ते आ'ला की रूहानी नज़र तुम पर रहेगी और उन की दुआ़ए तुम्हें मिलती रहेगी।

(12) इस त़रह़ दीनो सुन्नियत की तब्लीग़ होगी और दीन फैलाना नबी और सहाबा और औलिया की सुन्नत है तो आप को सुन्नत पर अ़मल करने का भी सवाब मिलेगा।

(13) इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते है कि मेरे नज़दीक इल्म का एक मस्अला किसी को समझा देना येह एक पहाड़ बराबर सोना ख़र्च करने से भी बेहतर है। और सब पर भारी बात येह है कि ख़ुद अल्लाह तआ़ला इल्म फैलाने और लोगों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाने वाले की ता'रीफ़ करता है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۳۳﴾

**तर्जमा :** और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो लोगों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाए, ख़ुद नेकी करे और येह कहे मैं मुसलमान हूं। (पारह 24 सूरए ह़ामीम अस्सजदा आयत नं. 33)

या'नी अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से अच्छी बात येह है कि लोगों को अल्लाह की तृरफ़ बुलाओ।

तो ऐ लोगो ! क्या येह कम हैं ? लोगों को अल्लाह की तृरफ़ बुलाने वाला क़ियामत के दीन नूर के पहाड़ पर होगा। तो लोगो ! मिशन से जुड़ जाओ और किताब, दर्स वग़ैरा के ज़रीए़ से इल्म फैलाने में हमारी मदद करो।

## (5) पैदल मस्जिद जाने वाला

एक नमाज़ी को हम ने देखा कि उस के पास सुवारी के लिये स्कूटर (Two wheeler) होते हुए और घर के क़रीब मस्जिद होते हुए भी कभी पैदल कभी स्कूटर पर वोह दूर वाली मस्जिद में जाता था। उस को जब पूछा गया कि वोह ऐसा क्यूं करता है, इस में तेरी क्या निय्यत है ? तो उस का जवाब :

(1) दूर वाली मस्जिद का जो इमाम है वोह ज़ियादा इल्म रखता है क़िराअत अच्छी करता है, नमाज़ के बा'द चन्द मिनिट रुक कर मस्अले मसाइल समझाता है। येह हि़साब से मस्जिद में नमाज़ में दिल जमई (हुज़ूरे क़ल्बी) मुयस्सर आती है। जब कि

(2) जो क़रीब वाली मस्जिद है वहां इमाम ट्रस्टी के हाथों मजबूर है कभी कभी वोह इमाम को हटा कर खुद मुसल्ले पर खड़ा हो जाता है, इमाम नौकरी चली जाने के डर से चुप रहता है और वोह नमाज़ नमाज़ नहीं रह जाती। एक के इलावा दूसरे जो ट्रस्टी है वोह या तो खुशामत ख़ोर है या डरपोक है ऐसी सूरत में क्या मा'लूम वोह मुसल्ले पर कब्ज़ा कर लेवे येह समझ कर हम हट गए।

येह जाहिल ट्रस्टी को इमामत का इतना शौक़ था तो वोह कहीं मद्रसे में जा कर इमामत का कोर्स कर लेता थोड़ी ता'लीम ले

लेता तो बात अलग थी मगर यहां तो **"निम ह़कीम ख़त़रे जान"** वाला मुआ़मला है।

(3) और जो थोड़े दूर वाली मस्जिद है वहां अल्लाह के वली का आस्ताना भी है फ़ातिह़ा ख़्वानी भी हो जाती है और रूह़ानी सुकून भी मिलता है।

(4) एक फ़ाएदा येह भी है कि मस्जिद घर से जितनी दूर होती है उतने क़दम ज़ियादा पड़ेंगे और घर से वुज़ू कर के पैदल मस्जिद की त़रफ़ जाने वाले को हर क़दम पर नेकियां मिलती हैं तो जितने क़दम ज़ियादा इतनी नेकियां ज़ियादा।

जैसा कि मदीनए मुनव्वरा में बनी सलमा मस्जिद के दूर मदीने के किनारे रहते थे उन्हों ने चाहा की मकान बेच कर मस्जिद शरीफ़ के क़रीब *Shift* हो जाए, तो हु़ज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को ऐसा करने से मन्अ़ फ़रमाया और कहा : पारह 22 सूरए यासीन आयत नं. 12 وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا **तर्जमा :** हम लिख रहे है जो उन्हों ने आगे भेजा।

यहां आसार से मुराद वोह क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की त़रफ़ चलने में रखता है। हु़ज़ूर ने बनी सलमा से फ़रमाया कि तुम मकान तब्दील न करो। तुम्हारे क़दम लिखे जाते है, जितनी ज़ियादा दूर से आओगे, इतने ही क़दम ज़ियादा पड़ेंगे और उतना सवाब ज़ियादा मिलेगा।

(5) आदमी जब अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करता हुवा ज़मीन पर चलता हैं तो ज़मीन ख़ुश होती है और वोह ज़मीन दूसरी ज़मीन पर फ़ख़्र करती है और इतना ही नहीं मगर वोह ज़मीन क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने गवाही देगी के तेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझे मेरे पर चलते वक़्त याद किया था।

(6) और येह भी है कि मस्जिद जाते वक़्त रस्ते में कोई अन्धा मिलेगा तो रास्ता क्रोस कराऊंगा, कोई मोहताज मिलेगा तो उस की मदद करूंगा, कोई आ़लिमे दीन मिलेगा तो उस की ता'ज़ीम करूंगा, कोई मुसलमान मिलेगा तो सलाम करूंगा, कोई सलाम करेगा तो जवाब दूंगा, कोई बद अख़्लाक़ मिलेगा और मुझे गाली देगा या दूसरी कोई तक्लीफ़ देगा तो सब्र करूंगा, कोई जनाज़ा मिलेगा तो कन्धा दूंगा, कोई ना महरम औ़रत सामने आएगी तो ह़या करूंगा, अपना दामन बचा कर निकल जाऊंगा।

(7) और येह भी निय्यत की मस्जिद में कहीं कूड़ा करकट या मकड़ी के जाले वगै़रा होंगे तो दूर करूंगा, कहीं पानी टपकता मिलेगा तो नल वगै़रा बन्द करूंगा, मुसलमानों से मुलाक़ात करूंगा, मुसाफ़ह़ा करूंगा।

(8) और येह के चल कर मस्जिद जाने में एक फ़ाएदा येह है कि चलने से सिह़त बर क़रार रहती है, कसरत (Exercise) होती है।

## (6) जो नेकी का इरादा करे, मगर न कर सके

अल्लाह तआ़ला बन्दे की निय्यत देखता है कोई बन्दा खुलूस दिल से अगर नेकी का इरादा करे और उस को पूरा न कर सके तो वोह उस ताअ़त का पूरा पूरा सवाब पाएगा।

मक्कए मुकर्रमा में जुन्दा बिन ज़मरतुल्लैस बहुत बूढ़े शख़्स थे, जब हिजरत के बाब में आयत नाज़िल हुई और आप ने सुनी तो उन्हों ने कहा मैं कोई मुस्तस्ना (मजबूर) तो नहीं हूं मेरे पास कसीर माल है उस को ख़र्च कर के मैं मदीनए मुनव्वरा पहुंच सकता हूं। खुदा की क़सम ! अब यहां मक्के में एक रात भी नहीं रहूंगा मुझे ले चलो।

चुनान्चे, उन्हें खाट पर (चारपाई, पलंग, खाटला) पर सुला कर ले चले और मक़ामे तन्ईम येह वोह जगह है जहां मस्जिदे आ़इशा है और मक़ामी लोग वहां से उ़मरह का एह़राम बान्धते है और मक्का से मदीना जानिब चन्द मिल पर वाके़अ़ है वहां पहुंचे और आप का इन्तिक़ाल हो गया। आख़िरी वक़्त में उन्हों ने अपना दाहिना हाथ (Right hand) अपने ही बाएं हाथ (Left hand) पर रख कर कहां : ऐ अल्लाह ! येह तेरे और तेरे रसूल का हाथ है मैं इस पर बैअ़त करता हूं। जिस पर तेरे रसूल ने बैअ़त की और रूह़ परवाज़ कर गई।

येह ख़बर सुनते ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने फ़रमाया : "ऐ काश ! वोह मदीने तक पहुंच जाते तो उन का अज्रो सवाब कितना बढ़ जाता।"

और येह ख़बर सुनते ही मुनाफ़िक़ लोग और मक्के के मुश्रिक बकने लगे कि जिस मक़्सद से निकले थे वोह उन्हें न मिला। इस बात पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ

**तर्जमा :** जो कोई अल्लाह की राह में घर बार छोड़ कर निकलेगा वोह ज़मीन में बहुत सारी गुन्जाइश पा लेगा और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ हिजरत की निय्यत से निकला और उसे मौत आ गई तो उस का सवाब अल्लाह के ज़िम्मे हो गया।

(पारह 5 सूरए निसा आयत नं. 100)

यहां बताया गया और क़ियामत तक के मुसलमानों को येह मुज़्दा (ख़ुश ख़बरी) सुनाया गया कि तुम्हारी निय्यत अच्छी हो और अगर तुम अ़मल पूरा न कर सको तो भी पूरा सवाब पाओगे। जैसे

हज, उमरह के लिये जाने वाला या मस्जिद की तरफ़ चलने वाला या कोई और नेक काम करने वाला किसी मजबूरी के सबब वोह काम पूरा न कर सका तो वोह पूरे पूरा अज्रो सवाब पा लेगा। बेशक ! अल्लाह पाक तुम्हारी निय्यतें देखता है और वोह अता करने में बखील (कन्जुस) नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

## सवाब का मिलना निय्यतों पर है

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ की सफ़े अव्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पहली सफ़ में जगह हासिल करने में बहुत कोशां हुए यहां तक के जिन के मकानात मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकानात बेच कर मस्जिद के क़रीब मकान ख़रीद ने लगे के सफ़े अव्वल में जगह मिलने से महरूम न रहे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और लोगों को तसल्ली दी गई के सवाब निय्यतों पर हैं।

अल्लाह तआला अगलों को भी जानता है और जो लोग किसी उज़्र के सबब से पीछे रह गए उन को भी जानता है और पीछे रह जाने वालों की और आगे पहुंचने वालों की सब की निय्यत उसे मा'लूम है उस से कुछ भी छुपा नहीं। जैसा के अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल कर के फ़रमाया :

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِیْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِیْنَ ۝

**तर्जमा :** और बेशक ! हमें मा'लूम है जो तुम्हीं में से आगे बढ़े और बेशक ! हमें मा'लूम है तुम्हीं में से जो पीछे रहे।

(पारह 14 सूरए हिज्र आयत नं. 24 )

जो लोग इत़ाअ़त करने में और ख़ैर जम्अ़ करने में आगे बढ़ने वाले हैं और जो सुस्ती में पीछे रह जाने वाले है या'नी कि जो लोग सुस्ती से पीछे रह गए वोह तो नुक़्सान में हैं मगर जो लोग सुस्ती से नहीं मगर किसी उ़ज़्र के सबब पीछे रह जाते है वोह नुक़्सान में नहीं है अगर किसी का मकान मस्जिद से दूर है और वोह घर से वुज़ू बना कर मस्जिद की त़रफ़ जितने क़दम चलेगा वोह उतना ज़ियादा सवाब पाएगा। سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

## हि़कायात

### (1) सौ (100) इन्सानों का क़ातिल

बनी इसराईल में एक बहुत ही बड़ा गुनहगार बन्दा था उस ने निनान्वे (99) इन्सानों का क़त्ल किया। अब उसे नदामत (शर्मिन्दगी, पछतावा) हुवा, सोचा कि मैं ने बहुत ज़ुल्म किया येह सोच कर वोह अपने ज़माने के एक आ़बिद के पास चला गया और पूछा कि क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ? उस आ़बिद ने कहा : तूने बहुत बड़े गुनाह किये तेरे लिये मुआ़फ़ी की कोई सूरत नहीं है। अब उस ने सोचा कि जब मुआ़फ़ी है ही नहीं तो क्या निनान्वे और क्या सौ उस ने उस आ़बिद को भी मार डाला और 100 पूरे हुए।

थोड़े अ़र्से बा'द उस ने फिर सोचा कि मैं तो गया था तौबा करने और मैं ने तो गुनाह का और बोझ बढ़ा दिया। अब मुझे सच्ची तौबा कर लेनी चाहिये। उस के पूछने पर जानने वालों में से किसी ने कहा कि तू बैतुल मुक़द्दस चला जा वहां अल्लाह का एक मक़्बूल बन्दा रहता है, वोह तुझे तौबा करा देगा और उस वली की दुआ़ से अल्लाह तआ़ला तुझे ज़रूर मुआ़फ़ कर देगा, अब वोह तौबा की

निय्यत से दोबारा घर से निकला और वलीअल्लाह की बारगाह की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा।

अभी उस ने थोड़ा ही फ़ासिला तै किया था कि उस पर मौत आ गई। चुनान्चे, फ़िरिश्ते ने उस की रूह क़ब्ज़ कर ली अब उस की मौत के बा'द अज़ाब के फ़िरिश्ते व रह़मत के फ़िरिश्ते के बीच में बह़स छिड़ गई कि उस की रूह किस के ह़वाले होनी चाहिये। रह़मत के फ़िरिश्तों की दलील येह थी कि वोह तौबा की निय्यत से घर से चला था और अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों का कहना येह था कि येह सौ (100) इन्सानों का क़ातिल है और अभी उस ने तौबा नहीं की।

अब येह फ़िरिश्ते बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए कि आख़िर येह ताइब है या ज़ालिम ? अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हुक्म दिया कि ज़मीन की पैमाइश (Measurement) की जाए और देखो कि वोह अगर अपने घर से क़रीब हैं तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस की रूह़ ले जाए और अगर वोह मेरे औलिया के घर से क़रीब है तो रह़मत के फ़िरिश्ते उस की रूह़ को ले ले।

इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू सिमट जा और मेरे बन्दे को तौबा के मक़ाम के क़रीब कर दें। क्यूंकि वोह बड़ी उम्मीद ले कर अपने घर से चला था, वोह नदामत के आंसू बहा चुका था। उस की निय्यत तौबा की थी अगर्चे वोह पहुंच नहीं पाया मगर उस की नेक निय्यत उस के काम आ गई।

**सबक़ :** बन्दा कभी अपने रब से मायूस, नाउम्मीद न हो कि मायूसी कुफ़्र है। बन्दा चाहे कितना भी बड़ा गुनहगार क्यूं न हो सच्ची तौबा करे, अपने गुनाहों पर नादिम हो, आइन्दा गुनाह न करने की सच्ची निय्यत करे। अल्लाह सारे गुनाह मुआ़फ़ कर देता है।

जैसा कि पारह 24 सूरए ज़ुमर आयत नं. 53

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۳﴾

**तर्जमा :** ऐ मह़बूब ! तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो ! जिन्हों ने अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म किया तुम अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो। बेशक ! अल्लाह सब गुनाह मुआ़फ़ कर देता है और बेशक ! वोह बख़्शने वाला महेरबान है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

## (2) चरवाहे की निय्यत, आटे का पहाड़

अह़ादीसे मुबारका में है कि ह़ुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने उम्मतियों को बताया कि बनी इसराईल की आबादी वाले अ़लाक़ों में सख़्त अक़ाल (सुखा, क़ह़त़) पड़ा और उस की वजह से ग़ल्ले की पैदावार कम हो गई और पानी की क़िल्लत पैदा हो गई इन्सान और चौपाए इस की वजह से मरने लगे।

इसी अस्ना में एक मुसलमान चरवाहा अपने मवेशियों को चराने के लिये जंगल में गया था, वहां बड़ी बड़ी पहाड़ियां थी उस की नज़र एक बहुत ही बुलन्द पहाड़ पर पड़ी तो वोह बोला कि अगर येह पहाड़ आटे का होता और अगर मैं इस का मालिक होता तो ज़रूर येह सारा आटा मैं अल्लाह के बन्दों की ख़िदमत में अल्लाह की रिज़ा के लिये ख़र्च कर डालता और किसी भी इन्सान को भूक से मरने न देता।

उस दौर के पैग़म्बर पर अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्ते के ज़रीए़ वही भेजी मेरे उस बन्दे को ख़ुश ख़बरी सुना दो कि उस की निय्यत के बदले में उस के आ'माल नामे में पहाड़ बराबर आटा ख़र्च करने का सवाब मैं ने लिख दिया।

हज़रत शैखुल इस्लाम ने वटवा शरीफ़ में हज़रत कुत़्बे आलम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के आस्ताने के क़रीब एक तक़रीर में फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ बन्दे के नामए आ'माल में ऐसे ऐसे आ'माल निकलेंगे जो उस ने दुन्या में अन्जाम नहीं दिये, वोह खुद तअ़ज्जुब करेगा तो कहा जाएगा बन्दे ! येह तेरी निय्यत थी कि तू दुन्या में कहा करता था। काश ! मेरे पास दौलत होती तो मैं मस्जिद ता'मीर करवाता। ऐ काश ! मेरे पास माल होता तो मैं सदके़ देता हज करता।

और जो दुन्या में ह़राम कारिया करने वालों को देख कर येह कहते है कि मेरे पास माल होता तो मैं शराब पीता या जूआ़ खेलता तो अब वोह निय्यत की सज़ा पाएगा।

## (3) नदीने रास्ता दे दिया

येह वाक़िआ़ हम ने हज़रत शैखुल इस्लाम की ज़बान से गढ़ड़ा में सुना जो निय्यत के तअ़ल्लुक़ से है। आप ने फ़रमाया कि

एक शैख़ ने अपने ख़ादिमे ख़ास को बुला कर फ़रमाया कि येह टीफ़ीन में खाना ले कर फुलां जंगल में चले जाओ वहां तुम्हें एक दरवेश मिलेगा, उसे मेरा सलाम पहुंचाओ और खाना पहुंचाओ। ख़ादिम ने जवाब दिया : हज़रत ! वहां तक पहुंचना दुश्वार है रास्ते में जो नदी पड़ती है उस में सैलाब (बाढ़) है मैं कैसे जाऊं ? आप कोई ह़ल बता दे।

शैख़ ने कहा कि नदी से कह देना कि मैं एक ऐसे दरवेश के पास से आया हूं जो ज़िन्दगी में कभी अपनी बीवी के पास गया ही नहीं। मुरीद येह जानता था कि शैख़ के चार फ़रज़न्द है और येह कैसे हो सकता है कि कोई बीवी को छूए भी नहीं और बिग़ैर टच (Touch) किये बेटे पैदा हो जाए, लेकिन अदब के ह़िसाब से वोह ख़ामोश रहा और चल पड़ा।

जब वोह नदी के क़रीब हुवा तो उस ने वोह बात कह दी जो शैख़ ने बताई थी कि ऐ नदी ! मैं एक ऐसे दरवेश के पास से आया हूं जो ज़िन्दगी में कभी अपनी बीवी के पास नहीं गया, नदी ने रास्ता दे दिया और वोह आराम से जंगल में दूसरे दरवेश के पास पहुंच गया।

वोह दरवेश ने ख़ादिम के सामने खाना खाया और बरतन मुरीद को लौटाए। अब उस ने कहा कि हज़रत ! एक नुस्ख़ा मिला था तो नदी ने रास्ता तो दे दिया मगर अब मैं वापस किस त़रह़ जाऊंगा ? दरवेश ने कहा कि तू नदी से कह देना। मैं एक ऐसे दरवेश के पास से आया हूं जिस ने ज़िन्दगी में कभी खाने का एक लुक़्मा नहीं खाया। अब ख़ादिम सोचने लगा कि इन्हों ने तो मेरे सामने पूरी प्लेट साफ़ कर दी और येह कहते है ज़िन्दगी में कभी खाना नहीं खाया मगर यहां भी अदब का लिहाज़ रख कर वोह ख़ामोश रहा, नदी ने रास्ता दे दिया, वोह वापस आ गया।

जब शैख़ ने ख़ैरिय्यत त़लब की तब ख़ादिम ने अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर ! काम तो हो गया मगर दिल में दगदगा पैदा हो गया न आप की बात समझ में आई, न वोह दरवेश की, आप اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ साहि़बे औलाद हो और वोह दरवेश ने तो मेरे सामने खाना खाया अब येह क्या राज़ है ? जो मैं न समझ सका !

हज़रत ने फ़रमाया : हमारा बीवी के पास जाना या कुर्बत करना येह ख़्वाहिशे नफ़्सानी का नतीजा नहीं है मगर बीवी का ह़क़ अदा करना येह सुन्नते रसूल है। तो हम उस का ह़क़ अदा करने के लिये अगर कुर्बत करते है तो ख़्वाहिशे नफ़्सानी नहीं है मगर इबादते इलाही है।

और उस बुज़ुर्ग का खाना खाना तो वोह लज़्ज़ते नफ़्स के लिये नहीं खाते मगर ज़िन्दगी में जिस्म की बक़ा के लिये और कुव्वते इबादते इलाही के लिये खाते है तो उन का खाना खाना इबादते इलाही है, तो उन को येह कहने का हक़ है के उन्हों ने (नफ़्स के लिये) कभी खाना नहीं खाया।

देखा अच्छी निय्यतें आदमी को कहां से कहां पहुंचा देती है कि नदी, दरिया भी उस का हुक्म मानते है यहां तक शेर और दूसरे जंगल के जानवर भी दरवेशों का हुक्म मानते है और दुन्यादार का हुक्म उस के घर वाले भी नहीं मानते, तो येह है निय्यतों की बरकतें। سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

## (4) मटके का बदबूदार पानी और बादशाह का इन्आम

येह हिकायत हम ने मौलाना रूम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब हिकायते रूमी से चुनी है बहुत पूरानी सच्ची कहानी है जब कि हुक्मरान नेक हुवा करते थे आज की त़रह़ ज़ालिम जाबिर और क़ौम के गद्दार नहीं हुवा करते थे।

एक अ़रब देहात (Village) में काश्तकारी कर के बड़ी मुश्किले उठा के गुज़र बसर करता था, उस की बीवी हमेशा उस से लड़ती झगड़ती और कोसती रहती कि तुम्हारी ज़िन्दगी बेकार बीत रही है, तुम एक दम निकम्मे हो तुम नाकाम हो तुम ने न हम को न बच्चों को कभी सुख दिया। वग़ैरा वग़ैरा....

वोह कहता के न मैं कोई हुनर जानता हूं न मेरे पास कोई वसाइल है न खेती बाड़ी में कोई इतनी पैदावार है बस मैं तवक्कुल करता हूं। बीवी ने जवाब दिया कि अपनी काहिली और सुस्ती को तवक्कुल का नाम दे कर खुदा पर इल्ज़ाम न रखो। कुछ करो...

एक मरतबा मीयां बीवी दोनों ने मिल कर सोचा कि बादशाह सलामत से कुछ मदद मांगी जाए वोह बड़ा रह़्म दिल है और अपनी रिआ़या पर महेरबान है (मोदी जैसा नहीं है) लेकिन फिर मर्द बोला की बादशाह के दरबार में जाने के लिये मेरे पास एक अच्छा लिबास भी नहीं है न मेरे पास सुवारी के लिये कोई घोड़ा या दूसरा जानवर सिवाय एक मरीयल गधा जो मिस्ले लाश है (बहुत कमज़ोर और बीमार) और बादशाह का दरबार (State Capital) बहुत दूर है, लम्बा सफ़र है और येह के जब रिआ़या बादशाह के पास जाती है तो कुछ तोह़फ़े तह़ाइफ़ ले कर जाती है, यहां तो येह भी कुछ नहीं है कोई मा'मूली चीज़ भी नहीं है और आख़िरी बात तो येह है कि जैसे अल्लाह तबारक व तआ़ला से कुछ अ़र्ज़ करने से पहले बन्दे उस की ह़म्दो सना करते है कुछ इ़बादत करते है बा'द में दुआ़ मांगते है। ऐसे ही बादशाहों के दरबार में जाने वाले उस के क़सीदे पड़ते है, ता'रीफ़ करते है जब के मुझे तो बोलने का भी सलीका नहीं मैं वहां कैसे जाऊं ?

बात तो उस की सच थी न अच्छे कपड़े, न सुवारी, न कोई तोह़फ़ा, न ख़ुद में कोई कमाल और बड़ी दूर का मुआ़मला मगर इस के सिवा कोई चारा भी न था। आख़िर बीवी ने मश्वरा दिया कि मेरे पास बारिश के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी से भरा हुवा एक मटका है हमारे गांव की आबो हवा बड़ी ख़ुश गवार है। पानी बड़ा मीठा है हमारे यहां की पहाड़ियों की हवा ख़ुश गवार है पानी जैसा पानी शहर वालों को कहां मुयस्सर आता है मैं तुम्हें येह पानी का मटका देती हूं तुम उसे ले कर जाओ और बादशाह की बारगाह में नज़्र करो वोह बड़ा ही नुक्ता नवाज़ है वोह ज़रूर ख़ुश होगा और तुम्हें ज़रूर कुछ न कुछ अ़त़ा करेगा।

वोह किसान तय्यार हो गया बीवी ने मटके का मुंह बन्द कर के ऊपर कपड़ा ढांक दिया कई दिनों का सफ़र तै कर के वोह दारुल सल्तनत (Capital) पहुंचा।

सह्रा (Desert) की सफ़र थी दिन भर तेज़ धूप में पानी गर्म हो जाए और उस के बुख़ारात (Hot breeze) मटके का मुंह बन्द होने की वजह से बहार न निकल सके और रात में ठन्ड में पानी मिस्ले बरफ़ बन जाए अब वोह पानी बिगड़ कर बदबूदार हो गया।

आख़िर वोह दरबार तक पहुंच ही गया बड़ी मिन्नतो समाजत के बा'द हाज़िरी का मौक़अ़ मुयस्सर आया। बादशाह समझ गया येह बिचारा बड़ी उम्मीदे ले कर आया है, किसान ने मटका पेश किया, बादशाह ने ख़ादिम के हाथ उसे अलग रखवा दिया और उस ने किसान से कहा : तू बड़ा थक कर आया है, एक दिन आराम कर अपनी थकान दूर कर और तू कल मेरे पास आना बादशाह ने ख़ादिम से कहा : इसे शाही मेहमान खाने (Guest room) में ठहराओ, इसे पहनने के लिये कपड़े दो और इसे खाना खिलाओ और इसे कल मेरे पास लाना।

जब मटका खोला गया तो पानी बिगड़ चुका था मटके से बदबू आ रही थी उसे फेंकवा दिया और ख़ादिमों से कहा के उसे ख़बर न होने पाए कि उस के हदिये का ह़श्र क्या हुवा है ! नही तो उस का दिल टूट जाएगा।

दूसरे दिन बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे शहर और जंगल की सैर कराए जब वोह शहर और जंगल और बाग़ात और चश्मो (झरने) की सैर को गया, तो वोह समझ गया कि यहां तो फल, फ्रुट, अनाज की फिरावानी है दरियाए बह रहे है इन ने'मतों के सामने मेरे

मटके का पानी तो कुछ हैसियत नही रखता, तो अपने तोहफ़े पर वोह खुद शर्मिन्दा हुवा।

जब वोह अपने घर के लिये निकला तो बादशाह ने अपने वज़ीर से कहा : हम ने उस के तोहफ़े को नहीं देखा हम उस की निय्यत देखते है वोह अपनी हैसियत के हिसाब से अपनी बेहतर से बेहतर चीज़ लाया, वोह हमे खुश करने को आया और हम से बड़ी उम्मीदे ले कर आया हम अपनी शान से उसे अ़ता करेंगे। हम उस का अ़मल नहीं उस की निय्यत देखेंगे।

जाते वक़्त बादशाह ने उसे उ़म्दा सुवारी (घोड़ा) अ़ता फ़रमाया उस के अहलो अ़याल के लिये कपड़े और कुछ नक़दी (Cash) अ़ता फ़रमाई वोह खुशी खुशी अपने घर पहुंचा और उस ने अपनी बीवी से कहा कि मैं जो तोहफ़ा बादशाह की खि़दमत में ले कर गया था दूसरा कोई होता तो मेरे मुंह पर मार देता और मुझे इन्आ़म की जगह पर मेरी गर्दन मार देता। येह जो तोहफ़े में उस की बारगाह से लाया हूं येह सिर्फ़ उस का फ़ज़्ल है कि करीम हमेशा नवाज़ता ही है।

**सबक़ :** इस हि़कायत में हमारे लिये येह सबक़ है कि हम जो ता़अ़त बजा लाते है और जिस इबादत पर हम खुश होते है फ़ख्र करते है उस की कोई वुक़्अ़त ही नहीं है।

एक तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में इबादत करने वालों की कमी नहीं है और वोह बे परवाह है उसे हमारी इबादत की ज़रूरत नहीं है और हमारी इबादते भी किसान के मटके के बदबूदार पानी जैसी है जो हमारे मुंह पर मार देने के लाइक है। मगर वोह करीम रब हमारी पर्दा दरी करता है हमारा भरम रख लेता है और करम करता है हमें नवाज़ता है अगर वोह अ़द्ल करे तो हम कहीं के न रहे।

लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि अपने गुनाहों और ग़लतियों, ख़ामियों को याद रखे, शर्मिन्दा रहे, तौबा करते रहे और उस की बेपायां ने'मतों का शुक्र करते रहे।

## (5) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और चरवाहा

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने एक चरवाहे को देखा कि जो कह रहा है। ऐ करीम ख़ुदा ! तू कहां है ? तू बता के मैं तेरा नौकर बनू, तेरे जूते का तस्मा कस दूं, तेरे बालों में कंघी करूं, तेरे कपड़े बना दू और गाज़ बटन लगा दूं, तेरे कपड़ो से धूल मिट्टी दूर कर दूं, जू, कीड़े साफ़ करूं, तेरी बारगाह में तेरे लिये दूध लाऊं, अगर तू बीमार हो तो तेरी ग़म ख़्वारी (बीमार पुर्सी, इ़यादत) करूं, तेरा प्यारा प्यारा हाथ चूमूं, तेरे नाज़ुक पैर दबाऊं, तेरा बिस्तर साफ़ करूं, मैं दूध और घी ले कर तेरे दरवाज़े पर आऊं, पनीर, रोगन, रोटीयां दही की टीकीया लाऊं, मेरी प्यारी बकरियां तुझ पर क़ुरबान हो, चरवाहा इस त़रह़ की बातें कर रहा था।

जब सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने येह सब बातें सुनी तो पूछा के तू किस के साथ बातें कर रहा था ? चरवाहे ने कहा : उस के साथ बात कर रहा हूं, जिस ने मुझे और तमाम काएनात को पैदा किया, जो इस काएनात का रब है। आप ने फ़रमाया : वोह तमाम चीज़ों से बे नियाज़ है, येह चीज़ें तो इन्सान की ज़रूरत है। वोह इस से बुलन्दो बाला है। तू ने गुस्ताख़ी की है, फ़ौरन येह सब छोड़ दे और तौबा कर, वोह चरवाहा अपनी ह़रकत पर शर्मिन्दा व अफ़्सोस करने लगा।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी के ज़रीए़ आगाह किया कि तेरा काम बन्दों को ख़ुदा से मिलवाना है न कि बन्दे को ख़ुदा से जुदा करना ? हर इन्सान की समझ और इ़ल्म और त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ इस्लाह़ करनी चाहिये। उस की अ़क़्ल,

समझ बूझ उस की गुफ़्तगू है जो गुफ़्तगू वोह करता है, उस के लिये बेहतर है। अल्लाह तबारक व तआ़ला तो दिल के इख़्लास को देखता है, अल्फ़ाज़ को नहीं।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया गया कि वोह चरवाहे को राज़ी करे। आप उसे तलाश करने निकले बहुत तलाश करने के बाद बिल आख़िर फिर मुलाक़ात हो ही गई। आप ने उसे बताया कि मुबारक ! तेरे ह़क़ में इजाज़त मिल गई है कि तू जिस त़रह़ चाहे अल्लाह तआ़ला को याद किया करे।

उस ने जवाब दिया : अब क्या मैं उस मन्ज़िल से आगे निकल गया हूं। आप ने चाबूक मार कर मेरे घोड़े का रास्ता बदल दिया, उस ने छलांग लगा कर आस्मान से बाहर निकल गया।

**सबक :** अल्लाह तआ़ला के यहां ज़ाहिरी अ़मल से बेहतर दिल का इख़्लास ज़ियादा ज़रूरी है, मुंह से अदा होने वाले अल्फ़ाज़ से ज़ियादा ज़रूरी दिल की कैफ़ियत है, अल गरज़ वोह चरवाहा जो कुछ कह रहा था वोह किसी इल्म या किसी मुर्शिद की रहनुमाई बिग़ैर कह रहा था। लेकिन जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे आगाह किया और रहनुमाई मिल गई, तो उसे बिल्कुल सह़ीह़ रास्ता मिल गया।

और लोगों को इल्मे दीन के बारे में समझाने के लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : पारह 14 सूरए नहल आयत नं. 125

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ط

**तर्जमा :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से इस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो। और फ़रमाता है :

पारा 27 सूरए ज़ारियात आयत नं. 55

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ۝۵۵

**तर्जमा :** और समझाओ समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।

## (6) मस्जिद के दरवाज़े पर खूंटी (Peg)

एक मुसाफ़िर घोड़े पर सुवार कही जा रहा था रास्ते के किनारे मस्जिद थी, नमाज़ का वक़्त था, सोचा के घोड़े को बान्ध कर नमाज़ अदा करूं, मगर कहीं कोई खूंटी नज़र न आई, घोड़े को यूंही छोड़ कर नमाज़ अदा कर ली, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द कही से एक लकड़ी ला कर मस्जिद के दरवाज़े पर गाड़ दी के मेरे जैसा कोई दूसरा मुसाफ़िर कभी आए तो वोह इस तक्लीफ़ से बच जाए। थोड़ी देर बा'द एक नाबीना शख़्स वहां से गुज़रा और उसी खंभे से पैर टकराया वोह गिर गया, बोला किस बे वुकूफ़ ने यहां खंभा गाड़ा है, मैं गिरा कोई दूसरा न गिरे येह सोच कर खंभा उखाड़ कर फेंक दिया, अब बात येह हुई के एक ने खंभा लगाया, दूसरे ने उखाड़ फेंका दोनों की निय्यत सहीह थी इस लिये दोनों सवाब के हक़दार बने।

## जो दूसरों का बुरा चाहे

क़ुरआने करीम पारह 22 सूरए फ़ातिर आयत नं. 43 में है कि

اِسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ

या'नी अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खिंचना और बुरे दांव चलाना और बुरे दांव अपने चलाने वालों पर ही पड़ता है।

या'नी **जैसा करोगे वैसा भरोगे** या **जैसी निय्यत वैसी बरकत,** या **जो गढ़ा खोदता है वोही गिरता है** तो आदमी को चाहिये की निय्यत अच्छी रखे और दूसरों का बुरा न करे, न सोचे, नहीं तो करने वाला ही गिरेगा।

सूरए फ़ातिर आयत नं. 10

وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ

**तर्जमा :** वोह जो बुरे दांव करते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब हैं और उन्हीं का मक्र बरबाद होगा।

## जो दुन्या चाहे

देखा येह गया कि अ़वाम में से अल्लाह का ख़ौफ़ निकल गया है और लोगों में से अक्सर ने दुन्या ही को सब कुछ समझ लिया है और उन की निय्यतें बस माल कमाना, माल जम्अ़ करना और बच्चों को सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम और मोडर्न ज़िन्दगी की रग़बत दिलाना ही रह गया है और उ़लमाओने भी लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाना बन्द कर दिया है शायद येह डरते है कि हम अगर सच बोलेंगे तो हमारे तोहफ़े, नज़राने बन्द हो जाएगे ऐसी सूरत में निय्यतों ही के साथ दुन्या ही की निय्यत रखने वालों का ज़िक्र किया जाए येह समझ कर निय्यतुल मोमिन में साथ साथ दुन्या का भी ज़िक्र करना हम ने मुनासिब समझा।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने पाकीज़ा कलाम में जगह जगह पर दुन्या की बुराई बयान फ़रमाई और जो लोगों की निय्यत सिर्फ़ दुन्या पाने की है उन की मज़म्मत फ़रमाई है : जैसा कि

पारह 2 अल बक़रह आयत नं 199 में

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

**तर्जमा :** कोई आदमी यूं कहता हैं ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में दे दे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और कोई यूं कहता है के ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा ले।

और अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 25 सूरए शूरा आयत नं. 20 में फ़रमाता है कि

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿۲۰﴾

**तर्जमा :** जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस के हक़ में आख़िरत की खेती बढ़ाए और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से (थोड़ा) कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम पारह 5 सूरए निसा आयत नं. 134 में फ़रमाता है कि

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾

**तर्जमा :** जो दुन्या का इन्आ़म चाहे तो अल्लाह ही के पास हैं दुन्या और आख़िरत दोनों का इन्आ़म और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है।

या'नी जिस को अपने आ'माल से दुन्या ही मक़्सूद हो तो वोह सवाबे आख़िरत से महरूम हो जाता है और जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये सवाबे आख़िरत के लिये अ़मल किये तो अल्लाह उस बन्दे को दुन्या व आख़िरत दोनों में सवाब देने वाला है इस सूरत में अल्लाह तआला से दुन्या ही चाहने वाला नादान, ख़सीस और

कम हिम्मत है जो आ'माले सालिहा के बदले दुन्या या'नी वाह वाही, मालदारी या ने'मतें चाहता है वोह आरिज़ी (Temporary) और फ़ानी (जल्दी ख़त्म हो जाने वाली) चीज़ के तालिब है। आदमी को चाहिये के अपने लिये उख़रवी अज्र की निय्यत करे और दुन्यवी ज़रूरतों के लिये ब क़दरे ज़रूरत पर किफ़ायत करे।

अल्लाह तआ़ला पारह 12 सूरए हूद आयात नं. 15-16 में फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا
وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝١٥ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا
النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٦

**तर्जमा :** वोह जो दुन्या की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहे हम उस को उस का पूरा फल देंगे और उस में कमी न करेंगे, येह वोह लोग है जिन के लिये आख़िरत में सिर्फ़ आग है और बरबाद हो गए और नेस्तो नाबूद हो गए उन के आ'माल जो वोह करते थे।

जो दुन्यवी ज़िन्दगी और उस की ने'मतों के तलबगार हैं अगर वोह दुन्या में कोई ब ज़ाहिर नेक आ'माल करते हैं जैसे रिश्तेदारों के साथ सिलए रहमी, मोहताजों को कुछ देना परेशान हाल लोगों की इम्दाद करना वग़ैरा तो अल्लाह तआ़ला उन के आ'माल का बदला दुन्या ही में दे देता है। जैसे कसरते औलाद, या कसीर माल या सिहतो तन्दुरुस्ती वग़ैरा और वोह उख़रवी ने'मतों से महरूम कर दिया जाता है।

और फ़रमाता है : पारह 15 सूरए बनी इसराईल आयत नं. 19 में कि

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ
جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ
وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

**तर्जमा :** और जो लोग येह जल्दी वाली चाहे हम उस में से उसे जल्दी दे दे फिर उस के लिये जहन्नम कर दे के उस में जाए मज़्म्मत किया हुवा धक्के खाता और जो आख़िरत चाहे और उस के लिये कोशिश करे और अगर वोह हो ईमान वाला तो उस की मेहनत काम आई ।

या'नी जो दुन्या का त़लबगार हो तो येह ज़रूरी नहीं के उस की हर ख़्वाहिश पूरी हो और वोह जो मांगे वोह सब उसे दिया जाए बल्कि उस में से खुदा जिसे चाहे जितना चाहे और जब चाहे देता है और कभी ऐसा भी होता है कि बिल्कुल मह़रूम कर दिया जाता है कभी ऐसा होता है कि  बहुत चाहता है मगर थोड़ा देता है कभी ऐसा होता है कि ऐ़श चाहता है मगर तक्लीफ़ दी जाती है कभी ऐसा होता है कि माल होता है मगर दूसरों का या दुश्मनों का क़ब्ज़ा हो जाता है कभी ऐसी बीमारी दे देता है कि तड़प तड़प कर मरता है और अगर मान लो के दुन्या बहुत मिल गई तो भी क्या फ़ाएदा क्यूंकि आख़िरत का तो नुक़्सान हो ही गया येह कितनी बड़ी बद नसीबी है उस के लिये जो दुन्या चाहे ।

इस के बरअक्स मोमिन बन्दा जो आख़िरत चाहता हैं अगर उस को दुन्या में भी ऐ़शो राह़त मिल गई तो वोह दोनों जहां में कामियाब है और अगर दुन्या में राह़त न मिली और तक्लीफ़ उठाई तो भी क्या नुक़्सान ? क्यूंकि आख़िरत की कभी ख़त्म न होने वाली ने'मत उस के लिये है ।

## दुन्या का धोका (फ़रेब) है

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने पाकीज़ा कलाम कुरआने करीम पारह 4 सूरए आले इमरान आयात नं. 185 में फ़रमाया कि

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ۝۱۸۵

**तर्जमा :** दुन्या की ज़िन्दगी तो बस (सिर्फ़) धोके का माल है ।

दुन्या की ह़क़ीक़त इस मुबारक जुम्ले ने बे नकाब कर के रख दी आदमी पूरी ज़िन्दगी इस को ह़ासिल करने में लगा रहता है और फ़ुरसत को ग़फ़्लत में गंवा देता है जब मौत आती है तो पता चलता है कि जिस फ़ानी के लिये मैं ने हमेशा बाक़ी रहने वाली उख़्रवी ज़िन्दगी का कितना नुक़्सान किया कि ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी तो वोही है जैसा कि ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम फ़रमाते है :

**''ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी का आगाज़ होता है मदफ़न से''** या'नी ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी की शुरूआ़त मरने के बा'द ही शुरूअ़ होती है बन्दए मोमिन दुन्या की अज़िय्यतों पर सब्र करता है वोह आख़िरत में बड़ी बड़ी ने'मतें पाएगा । سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ जैसा कि इस की अगली आयत में फ़रमाया गया कि बेशक ! ज़रूर तुम्हारी आज़माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और मुश्रिकों से बहुत बुरा भला सुनोगे और अगर तुम (दुन्या में) सब्र करोगे तो येह बड़ी हिम्मत का काम है और उस पर अज्र पाओगे ।

हमारे नबी ने कभी दुन्या पसन्द न फ़रमाई । ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर पर तशरीफ़ लाए तो आप ने देखा की दो जहां के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बोरिये पर आराम फ़रमां है और एक चमड़े

का तकिया जिस में नारियेल के रेशे भरे हुए है और जिस्मे अक्दस पर बोरिये के निशान पड़े हुए है। येह देख कर फ़ारूके आ'ज़म रो पड़े। सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोने की वजह जानना चाही तो अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! कैसरो किसरा तो ऐशो राहत में हो और आप रसूले ख़ुदा हो कर इस हाल में ! तो हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ उमर ! क्या तुम्हें येह पसन्द नहीं के उन के लिये दुन्या हो और हमारे लिये आख़िरत !

## दुन्या की ज़िन्दगी धोके का माल

अल्लाह तबारक व तआला सूरए हदीद आयत नं. 20 में फ़रमाता है :

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ

**तर्जमा :** जान लो के दुन्या की ज़िन्दगी सिवाए खेल तमाशो के और कुछ नहीं है और आराइश और तुम्हारा एक दूसरों पर बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना।

और फ़रमाता है :

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝

**तर्जमा :** और दुन्या की ज़िन्दगी फ़क़त धोके का माल के सिवा और कुछ नहीं।

येह उन लोगों के लिये है जो सिर्फ़ दुन्या ही का हो कर रह जाए और उसी पर भरोसा कर ले और आख़िरत की फ़िक्र न करे मगर जो शख़्स दुन्या में रह कर आख़िरत का तालिब हो और अस्बाबे दुन्या से भी आख़िरत ही के लिये इलाक़ा रखे उस के लिये

दुन्या धोके का माल नहीं है मगर उस के लिये दुन्या की कामियाबी आख़िरत का ज़रीआ़ है मताए सुरूर है।

हज़रते ज़ुन्नून मिसरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ गिरौहे मुरीदीन ! दुन्या त़लब न करो और अगर त़लब करो तो उस से मह़ब्बत न करो।

**तौशा यहां से लो आराम गाह और है।**

## काफ़िर दुन्या चाहता है

अल्लाह तबारक व तआ़ला क़ुरआने करीम पारह 2 सूरए अल बक़रह आयत नं. 212 में फ़रमाता है कि

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾

**तर्जमा :** काफ़िरों की नज़र में दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता की गई और (ग़रीब) मुसलमानों की मज़ाक़ उड़ाते है और तक़्वा वाले लोग क़ियामत के दिन उन से ऊपर (बुलन्द मक़ामो मर्तबे) में होंगे और ख़ुदा तआ़ला जिसे चाहे बे ह़िसाब अ़ता फ़रमाए।

काफ़िर हमेशा दुन्यवी ने'मतों की क़द्र करते है और उसी पर मरते है और मिस्कीन परहेज़गार मुसलमानों की दुन्यवी ह़ालत देख कर उन की मज़ाक़ उड़ाते है। जैसा कि दौरे नबवी में भी मालदार कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द, ह़ज़रते अ़म्मार इब्ने यासिर, सुहैब रूमी, ह़ज़रते बिलाल عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देख कर हसते थे और अपना सर ग़ुरूर व तकब्बुर से ऊंचा रखते थे।

**अल्लाह की पनाह**

## दौलते दुन्या ह़क़ीर है (क़ुरआन की अ़ज़मत)

क़ुरआने करीम पारह 14 सूरए ह़िज्र आयत नं. 87/88 में है कि

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ۝ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

**तर्जमा :** और बेशक ! हम ने तुम्हें सात (7) आयतें दी जो दोहराई जाती है और अज़्मत वाला कुरआन दिया और अपनी आंखे खोल कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने कुछ जोड़ो को बरतने के लिये दे रखा है और उन का कुछ ग़म न खाओ और मुसलमानों को अपनी रह्मत के दामन में ले लो ।

इन सात आयतों से मुराद सूरए फ़ातिहा है जो हर नमाज़ में हर रक्अत में दोहराई जाती है और उस के सिवा नमाज़ होती ही नहीं है । जिस की फ़ज़ीलतें बहुत है जिस का शुरूआत का आधा हिस्सा ह़म्दे बारी तआ़ला है और बाक़ी का निस्फ़ मोमिनो की अपने रब से दुआ़ है इस के सामने काफ़िरों को जो दुन्यवी ने'मते दी गई है वोह हैच या'नी की एक दम मा'मूली है । जैसा के सरवरे आ़लम, फ़ख़्रे मौजूदात, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"वोह हम से नहीं जो कुरआन की बदौलत हर चीज़ से बे परवाह न हो जाए ।"**

सूरए फ़ातिहा की येह सात (7) आयते बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर के उन सात काफ़िलों से भी बेहतर है । जिस में अनवाओ अक्साम (त़रह़ त़रह़ के) कपड़े, खुश्बू और जवाहिरात थे जिन्हें देख कर मुसलमानों को येह ख़याल आया कि अगर येह माल हमारे पास होता तो हम उस माल से तक़्वियत ह़ासिल करते और उन को अल्लाह की राह में ख़र्च करते । तब अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई कि ऐ मह़बूब ! तुम्हें सूरए फ़ातिहा की जो सात (7)

आयात अ़ता फ़रमाई गई है वोह अपने रूहानी, ईमानी और इरफ़ानी, उख़्रवी फ़ाएदे के पेशे नज़र उन सात (7) काफ़िलों से बेहतर है।

तो ऐ मह़बूब ! अपने मानने वालों से कह दो कि अपनी आंख उठा कर उन चीज़ों को रग़बत (पसन्द करना) के साथ न देखे जो हम ने काफ़िर जोड़ो को उन के चन्द रोज़ा फ़ाएदे के लिये दिया हुवा है तो उम्मते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चाहिये के वोह कुफ़्फ़ार के दुन्यवी साज़ो सामान की त़रफ़ और ऐशो त़रब की त़रफ़ आंखें फाड़ फाड़ कर और रश्क व ह़सरत से न देखे।

## दुन्या से नफ़रत

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते है कि अगर हर लज़्ज़त मेरे लिये जाइज़ कर दी जाए तब भी मैं दुन्या से इतना ही नादिम रहूंगा जितना लोग मकरूह और ह़राम चीज़ों से नादिम रहते है और फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने बुराइयों के मजमूए़ को दुन्या का नाम दे दिया है और दुन्या से सलामत लौटना इतना ही मुश्किल है जितना दुन्या में आना आसान है और येह भी फ़रमाया : दुन्या में जब किसी को ने'मतों से नवाज़ा जाता है तो आख़िरत में उस के हि़स्से कम कर दिये जाते है।

## दुन्या की त़रफ़ ह़ैरत से न देखो

दुन्या मोमिनों के लिये क़ैद खाना और काफ़िरों के लिये जन्नत है और काफ़िर इसी पर शैदा रहता है दुन्या के लिये जीता है और इसी पर मरता है मगर मुसलमानों को चाहिये कि दुन्या की रंगीनियां और फ़रैब कारियां देख कर धोके में ने आए। इसी बात को समझाने के लिये अल्लाह तआ़ला पारह 16 सूरए त़ाहा आयत नं. 131 में फ़रमाता है :

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيۡنَيۡكَ اِلٰى مَا مَتَّعۡنَا بِهٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡهُمۡ زَهۡرَةَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۙ۬ لِنَفۡتِنَهُمۡ فِيۡهِ‌ ؕ وَرِزۡقُ رَبِّكَ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى ﴿۱۳۱﴾

**तर्जमा :** ऐ सुनने वाले ! अपनी आंखें उस त़रफ़ न फैला जो जीती दुन्या की ताज़गी हम ने काफ़िर जोड़ो को रहने सहने के लिये दी हैं कि उसी के सबब से हम ने उन को फ़ित्ने में डाला और तेरे रब का रिज़्क़ सब से अच्छा और हमेशा रहने वाला है।

यहूदो नसारा और मुशिरको काफ़िर को अल्लाह तआ़ला ने दुन्या का जो सामान दिया हैं उस की ज़ैबो ज़ीनत उस की सजावट (Decoration) की त़रफ़ मोमिन हैरत से या लालच से न देखे क्यूंकि येह उन की चन्द रोज़ा राह़त है । ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "नाफ़रमानों की शानो शौकत न देखो बल्कि येह देखो कि गुनाह की ज़िल्लत उन के गलो की तौक़ (बेड़ियां) बनी हुई है। येह उन के ह़क़ में ने'मत नहीं मगर वबाल है, बेशक ! वोह अल्लाह के ग़ज़ब में पलटने वाले है।

सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि अगर मुझे कोई शराब पीने के लिये बुलाए तो मैं उस को इस बात से बेहतर समझता हूं की मुझे कोई दुन्या त़लबी के लिये बुलाए। ह़ज़रते अबू ह़ाजिम मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते है कि **दुन्या में कोई चीज़ ऐसी पैदा नहीं की गई है कि जिस का अन्जाम ह़ुज़्नो मलाल (ग़म और अफ़्सोस) न हो ।** और फ़रमाया : जो इबादत गुज़ार दुन्या को पसन्द करता हैं उस को रोज़े मह़शर खड़ा कर के फ़िरिश्ते येह ए'लान करेंगे कि येह वोह शख़्स हैं कि जिस ने अल्लाह तआ़ला की नापसन्दीदा चीज़ को पसन्द किया।

## दुन्या लहवो लअ़ब है

पारह 21 सूरए अन्कबूत आयत नं. 64 में है कि

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۞

**तर्जमा :** और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ खेल कूद है और कुछ नहीं है और बेशक ! आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या ही अच्छा होता अगर जान लेते।

दुन्या का घर तो बस ऐसा ही हैं जैसे बच्चे घड़ी भर खेल में दिल लगाते है और फिर चल देते है बस येही ह़ाल दुन्या का हैं मौत इन्सान को दुन्या से ऐसे जुदा कर देती है जैसे बच्चे खेलते खेलते मुन्तशिर हो जाते है।

## जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया

अल्लाह तआ़ला अपने पाकीज़ा कलाम कुरआने करीम पारह 23 सूरए ज़ुमर आयत नं. 22 में इरशाद फ़रमाता है :

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

**तर्जमा :** तो क्या वोह जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया और वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है वोह उस जैसा हो जाएगा जो पथ्थर दिल है ? तो ख़राबी है उस के लिये जिन के दिल यादे ख़ुदा की त़रफ़ से सख़्त हो गए।

ह़दीस शरीफ़ में है कि जब येह आयत ह़ुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया :

या रसूलल्लाह ! सीने का खुलना किस त़रह़ से होता है ? और उस की अ़लामत या'नी निशानी क्या है ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब नूर क़ल्ब में दाख़िल होता है तो वोह खुलता है और उस में वुस्अ़त होती है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : उस की क्या निशानी है ? फ़रमाया : दारुल ग़ुरूर या'नी दुन्या से दूर रहना और मौत के आने से पहले मौत की तय्यारी करना तो **दुन्या से नफ़रत और मौत की तय्यारी येह दिल में नूर पैदा होने की निशानी है।**

## दुन्या काफ़िरों के लिये जन्नत है

अल्लाह तआ़ला अपने पाकीज़ा कलाम कुरआने मजीद में पारह 25 सूरए ज़ुख़रुफ़ आयत नं. 32 से 34 तक इरशाद फ़रमाता है :

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَةَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَلَوْلَاۤ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ۙ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ۙ وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾

**तर्जमा :** क्या तुम्हारे रब की रह़मत वोह (काफ़िर) बांटते हैं हम ने उन में उन की ज़ैबाइश (Beauty) का सामान, दुन्यावी ज़िन्दगी में बांटा और उन में एक को दूसरे पर बड़ी बुलन्दी दी के उन में एक दूसरे को मज़ाक़ बनाए और येह के तुम्हारे रब की रह़मत उन्हों ने जो जम्अ़ किया है उस से बेहतर है।

और अगर येह बात न होती के सब लोग एक ही दीन पर हो जाए तो हम ज़रूर रह्मान के मुन्किरों को इतना देते के उन के लिये चांदी की छते और सीढीया बनाते के ऊपर चढ़ते और उन के घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त (बैठक) जिस पर तकिया लगाते और त़रह़ त़रह़ की आराइश और येह सब कुछ जीती दुन्या ही का अस्बाब है और आख़िरत तुम्हारे रब के नज़्दीक परहेज़गारो के लिये है।

येह दुन्या की ह़िकारत का आ़लम तो येह है कि तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस में है कि अगर येह दुन्या अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक एक मच्छर की टांग के बराबर होती तब भी किसी काफ़िर को उस में से एक गिलास पानी भी न देता। दूसरी ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने चाहने वालों की एक जमाअ़त के साथ कहीं जा रहे थे के रास्ते में एक मरी हुई बकरी नज़र आई आप ने फ़रमाया : "क्या देखते हो ? इस के मालिक ने इस को बे क़दरी से फेंक दिया है अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक इस दुन्या की क़द्र इतनी भी नहीं जितनी बकरी वाले के नज़्दीक इस बकरी के मरे हुवे बच्चे की हैं। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **दुन्या मुसलमानों के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िरों के लिये जन्नत है।**

## न मिलने की ख़ुशी न जाने का ग़म

अल्लाह तआ़ला पारह 27 सूरए ह़दीद आयत नं. 23 में फ़रमाता है :

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ

**तर्जमा :** ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से निकल जाए और खुश न हो उस पर जो तुम को मिले।

येह समझ लो कि अल्लाह तआ़ला ने जो मुक़द्दर फ़रमाया है वोह ज़रूर हो कर ही रहता है ग़म करने से गई हुई चीज़ वापस न मिलेगी और न फ़ना हुई चीज़ दोबारा बन जाएगी। तो **जो चीज़ फ़ना होने के लाइक़ हैं वोह मिले तब भी इतराने के लाइक़ नहीं है,** चाहिये तो येह के ग़म करने की जगह सब्र करे और इतराने की जगह शुक्र करे...बन्दा हमेशा अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे और उस की रिज़ा का त़लबगार रहे।

ह़ज़रते इमाम जा'फ़र सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते है : "ऐ इब्ने आदम ! किसी चीज़ के चले जाने पर क्यूं ग़म करता है कि येह ग़म करना उस को तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यूं इतराता है कि मौत एक दिन तुझे उस से जुदा कर देगी।

## दुन्या से नफ़रत

जब इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुन्या से किनारा कर लिया तो ह़ज़्ते सुफ़ियान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ाज़िरे ख़िदमत आ कर अ़र्ज़ की : या इब्ने रसूलुल्लाह ! आप के दुन्या छोड़ने से मख़्लूक़ आप के फ़ैज़ से मह़रूम हो गई तो आप ने जवाब में दो शेर पढे, जिस का मा'ना है :

किसी जाने वाले इन्सान की तरह़ वफ़ा भी चली गई और ह़या भी चली गई और लोग अपने अपने ख़यालात में ग़र्क़ रह गए। ब ज़ाहिर लोग एक दूसरे से इज़्हारे वफ़ा करते है मगर उन के दिल बिच्छुओ से लबरेज़ है।

## दुन्या वालों से दुन्या मांगना

एक बुज़ुर्ग सय्यिदुना राबिआ़ बसरिया को एक मरतबा मा'मूली लिबास में देखा तो अ़र्ज़ किया : अल्लाह के ऐसे बहुत से बन्दे है जो आप के एक इशारे पर नफ़ीस लिबास मुहय्या करा सकते है। फ़रमाया : मुझे ग़ैर से मांगने में इस लिये ह़या आती है कि दुन्या का मालिक तो ख़ुदा है और दुन्या वालों को हर चीज़ आरयतन (Temporary) दी गई है या'नी कुछ वक़्त के लिये दी गई है और जिस के पास हर चीज़ आरयतन हो उस से कुछ सुवाल करना येह तो नदामत का सबब है।

आप फ़रमाया करती थी कि ऐ अल्लाह ! मेरे ह़िस्से की दुन्या तेरे दुश्मनों को दे दे और मेरे ह़िस्से की आख़िरत अपने दोस्तों को दे दे मेरे लिये तो तू ही काफ़ी है येह आप के मुबारक अल्फ़ाज़ रहे। **अद्दुन्या लकुम, वल उक़्बा लकुम, मौला लि या'नी दुन्या तुम्हारे लिये और आख़िरत तुम्हारे लिये मेरे लिये तो बस मौला।**

वैसे ही एक मरतबा सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से ख़लीफ़ा हारून रशीद ने कहा कि मेरे से कुछ मांगो आप ने फ़रमाया : "मैं तुझ से क्या मांगू ? दुन्या मांगू या आख़िरत। तो उस ने जवाब दिया कि : "दुन्या ही मांग लो। आख़िरत तो मेरे इख़्तियार में नहीं है। "तो ह़ज़रत ने जवाब दिया : "दुन्या तो मैं ने उस के अस्ली मालिक से भी कभी नहीं मांगी तो तुझ से क्या मांगू ?

या'नी येह दुन्या इस लाइक़ ही नहीं है कि उस को त़लब करने के लिये ज़बान को ह़रकत दी जाए। سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क्या पाकीज़ा ख़यालात व अख़्लाक़ थे हमारे अस्लाफ़ के।

मोमिन की निय्यत हमेशा आख़िरत हो दुन्या नहीं। हम सिर्फ़ रिज़ाए मौला के लिये आ'माल करे।

**मोहसिने आज़म मिशन** की जानिब से शैख़ सा'दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की लिखी हुई किताब **गुलिस्ता व बोस्ताने सा'दी** गुजराती (भाषांतर) में छप चुकी है और बहुत जल्द मौलाना रूम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब **हिकायते रूमी** गुजराती (भाषांतर) और **तफ्सीरे अशरफ़ी पारह 18** गुजराती (लीपियांतर) में छपने वाली है आप अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिए। **डोनेशन** देने के लिए मोहसिने आज़म मिशन से कोन्टेक्ट करें।

**मिशन सेन्ट्रल H/O कमेटी बेंक डिटेल :**

**IDFC FIRST BANK :** MOHSINE AZAM MISSION

**AC NO :** 100 8831 2174

**IFSC CODE :** IDFB 0040309

## मिशन का मक़्सद,
## कौम की ख़िदमत

**अम्नो महब्बत की छांव में, ख़िदमत सुब्हो शाम करें,**
**आओ ! हम सब मिलझुल कर, पैग़ामे नबी को आम करें.**

### मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है

आप भी अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **मोहद्दिसे आज़म मिशन** से शाएअ़ होने वाली किताबें अपने अ़ज़ीज़ो रिश्तेदारों, उ़लमा और दिगर मुसलमानों को तोहफ़्तन दीजिये के तोहफ़ा देना सुन्नत है। मोमिन का दिल खुश होता है तो अल्लाह करीम खुश होता है।

इस (किताबों की छपाई के) कामों में जो ख़र्च हो उस माल का सवाब और इल्मे दीन फैलाने का और लोगों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाने की सई (कोशिश) करने का सवाब अपने मर्हूमीन को और हुज़ूर की तमाम उम्मत को और हज़रते आदम عليه السلام से ले कर क़ियामत तक आने वाले मोमिनीन की रूह को ईसाले सवाब कर के उन की अरवाह को खुश कर सके। आप भी इस कारे खै़र में हिस्सा लेने के लिये मोहद्दिसे आज़म मिशन से राबित़ा कीजिये।

**-: मिलने का पता :-**

**मक्तबए शैख़ुल इस्लाम, अलिफ़ किराना के सामने,**
**रसूलाबाद, शाहे आ़लम अहमदाबाद-380028**
**और मोहद्दिसे आज़म मिशन की तमाम ब्रान्चें**
**कोन्टेकट : 96 24 22 12 12**